कल्याणी : कितना कल्याण..?

समर्थ नारी गौरव

देवयानी नायक

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कल्याणी: कितना कल्याण?

देवयानी नायक

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-09-7

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail-com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - देवयानी नायक 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DEVYANI NAYAK

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कल्याणी: कितना कल्याण?

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा विधवा को कल्याणी संज्ञा देकर बहुत कुछ गुह्तता प्रकट की है। हमारी सोच इस विराटता को समझ उसकी सार्थकता कल्याणियों को कितना? किस तरह? किस अवस्था में? किस भावना से? सहयोग कर स्वयं का भी कल्याण कर रही है? होनी चाहिए।

पहले दिन 'कल्याणी' स्वरूप पर रिश्तेदारों, परिचितों का आकलन मृत पति की आर्थिक स्थिति पर जाता है, उस हिसाब से कल्याणी को सहानुभूति का पैमाना पेश किया जाता है, जबकि उसे उस समय असीम प्रेम, हिम्मत, सहानुभूति की आवश्यकता होती है। उसके बाद सहानुभूति के विभिन्न प्रकारों का स्वरूप उजागर होता हैं।

कुपुरुषों का सहानुभूति का तुरुप का इक्का बडा जटिल चिपकू घनत्व लिए होता है, उसमें डराने, आतंकित करने, प्रेम के बीज उगाने आदि पडावों की सीढ़ियाँ लंबी दूरी तक दिखाई देती है। उनका सोच यह कि जरुर सफलता मिलेगी और मेरा एकाधिकार स्थापित होगा।

नाते रिश्तेदारों का सहयोग, परिस्थितियों के अनुरूप खट्टे-मीठे अनुभव से प्राप्त होता है। कल्याणी पति विछोह, पारिवारिक जवाबदारियों, दस्तावेजों के नवीनीकरण की भाग दौड़ में पस्त-सी हो जाती है।रातें अवसादों से भरी रोते रोते सो जाती है। ऐसी पीड़ा पर उच्च शिक्षितों के संवाद भी कमतर नहीं होते हैं। एक बानगी देखिए- "अरे! अभी तो दो महीने ही हुए हैं विधवा हुए और ये शान से स्कूटी से घूम रही है।... काश उस समय वही लोग कल्याणी से सहयोगात्मक रुख अपनाकर कागजी कार्यवाही को पूर्ण करने में मदद करते या पूछ ही लेते।

दिन भर की भागमभाग, घर में अकेले या परिवार में रहकर भी अकेलापन का एहसास बहुत पीडा़जनक होता है। तीस पर घर की, बाहरवालों द्वारा बाहरी क्षेत्र से ताकां झांकी कौन? क्यों? कब तक आकर बैठेंगे? क्या हो रहा होगा? परिवारों का कल्याण से क्या रुख होगा? यह तालिका कौन अच्छी तरह से बना सकता है भला! सच बहुत समय रहता है कई लोगों का इस तरह के प्रपंच के लिए।

पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रमों में कल्याणी से विशेष व्यवहार कर उसे सती प्रथा से कम तनाव नहीं दिया

जाता है। कल्याणी को सुरक्षा के नाम से सुहाग की वस्तु का प्रयोग करने को कहा जाता है तो वहीं उसके माथे पर लगी बिंदी ना लगाते हुए उसे उसके हाथ पर या पहनी हुई चूड़ी पर लगाई जाती है, मानो उसे नहीं लगाएंगे तो बुरा लगेगा। कल्याणी को यह बातें क्या आहत नहीं करती होंगी? मानो बच्चे को बहला दिया हो। कार्यक्रमों में संगीत नृत्य से उसे मूकदर्शक बनना होता है, न कि कार्यक्रम का हिस्सा। कल्याणी को शगुन के पलों को याद रखकर उस पर का आनंद लेने के लिए नहीं छूपने के लिए बाध्य होना पड़ता है चाहे कोई कहे या ना कहे उसे उसके संस्कारों मैं घुट्टी के साथ पिला जो दी थी।

परित्यक्ता/कल्याणी की वेशभूषा पहनावे पर टिप्पणी रोचक विषय बन जाते हैं। परंतु उसकी वेशभूषा वस्त्रों के बदलाव के कारणों को जानने की जरूरत नहीं समझी जाती कि साड़ी ना पहन कर सलवार कमीज क्यों पहन रही है? यह फिजूल की टीका टिप्पणी आज के समय में भी करना किस प्रकार की मानसिकता को प्रदर्शित करता है? भविष्य के गर्त में क्या छुपा है? किसके साथ क्या घटित होने वाला है, यह बात सभी को समझना होगा।

तलाकशुदा/विधुर पुरुषों के लिए किसी तरह की समांतर चर्चाएँ न होकर 'बेचारा' संबोधन देकर जल्द से जल्द दूसरी शादी का प्रस्ताव देने में भी किसी को हिचकिचाहट पैदा नहीं होती है। उनके घूमने पर -'बेचारा अकेला है, घुमकर ही तो अपना समय व्यतीत करेगा।' कहकर विचारों का आदान-प्रदान होता है। क्या उनके बाहर घूमने, वेशभूषा पर टिका टिप्पणी जाती है? क्या उन्हें मस्तक पर तिलक विहीन रखा जाता है? क्या उनके कोई अधिकार और कर्तव्य कम होते हैं? या उन्हें 'अभागे' की दृष्टि से देखा जाता है? कई अनुत्तरित प्रश्न आज भी जिंदा है।

नई पीढ़ी इस सोच को काफी हद तक समाप्त करने को तत्पर दिखाई देती है। एकाकी जीवन बिता रहे अपने अभिभावकों को खुद पहल करके उन्हें जीवन संगिनी का संग दिला रहे हैं। विवाह या लव इन रिलेशनशिप के वीडियो प्रसारित कर खुशियाँ बांटने खुशियाँ मनाने की सकारात्मकता प्रेषित कर रहे हैं ताकि कूप मंडितों को इतनी गहरी बात आसानी से समझ में आ जाएँ। कुछ विज्ञापनों ने भी इस बात की स्वीकारोक्ति दी है विज्ञापन के जरिए जनजागृति फैलाने का काम विज्ञापन तेजी से कर रहा है। जीवन के आनंद को बनाए

रखकर खुशी-खुशी बचे समय को स्वस्थ्यता के साथ निकालने की आजादी दिखाई गई है जो कि आज की एकल स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता बन गई है। अतः परित्यक्ताओं/कल्याणीयों को ही आगे आकर खुशी-खुशी जीवन को अपने ढंग से संपादित कर जीना चाहिए। गुजराती भाषा में कहा गया है- "संसार छे चाल्या करे छे "अर्थात् यह संसार है चलता रहेगा। दूसरी बार यह जिंदगी नहीं आएगी। तब घुटकर जीवन नहीं आजादी के साथ हंसी-खुशी अपनों के लिए अपनों के बीच स्वयं के लिए सुरक्षित सम्मानित जीवन जीना ही चाहिए।

अभिव्यक्ति

क्यों नहीं वो भावभिव्यक्ति
पुरुषों में नारियों को समझने की
नहीं लगता मुझे, ये क्षमता थी
त्रिकाल दर्शियों में भी।
वेद पुराण ग्रन्थों में जब
नारी वेदनाओं का था रुदन
तभी क्यों नहीं समझा स्पंदन।
नहीं उठाती प्रश्न, राम कृष्ण पर
या रावण-महिषासुर पर
कालजयी बनी नारियाँ अब तक
तीव्रमान हो बदल रहा क्षण।
हो रही नारियाँ संघष र्अतीत
तब भी क्यों भावना सुप्त?
जानती हूँ पुरूषों की अहंकारिता
दर्शाती एक छत्र राज्य करना।
स्नेहासिक्त हृदय कई रूपों में प्रदिप्त
पशुता से रांझा, मजनू तक कुंठित।
नारियों के प्रतिदिन छः रूपों का आस्वादन

क्यों नहीं सीख लेते तब?
भावाभिव्यक्ति का वह भी तो एक रूप।
प्रश्न बौछारें नहीं चाहती नारियाँ
केवल प्रेमपाश-सी नज़रों से ही
सब कुछ भूलना चाहती नारियाँ।

स्त्री

आजाद कभी नहीं हो सकती
परिवार से
समाज से
झमेली दुनियादारी से...।
उम्र के दर पड़ाव पर भी
नहीं होते खत्म जख्म़
स्त्री चलती थकतीं
अनवरत प्रयासरत करती।
राखमय हो तब भी नहीं बदल सकती
विचारों को घिनौने पुरुषों के
जीवन उजाड़ कर पग पग मर
अंततः सो जाती अधूरे ख्वाबों को ले एक स्त्री।
कहना आसान है
कहा भी जाता है
एक नहीं कई कई बार यह
है नारी सशक्तिकरण में
नारी को सम्मान पूरा।
मानने लगे हैं पुरुष
नारी का भारी लोहा
सत् द्वापर में भी देवी स्वरूपा

पर आज तो है वह देवी मौनरूपा।
घिन आती है मुझे
यह सब देख पढ़ कुपुरुषों से
क्यों वो उछालते नारी की अस्मिता को?
लाचार स्त्री का हाथ पकड़
झट से बैंया मरोड़ करता शक्ति प्रदर्शन
विरोध जागृत होने पर देता बलात्कार और मौत
क्या नारी की सशक्तिकरण की है या परिभाषा?
गंदगी से लबरेज पुरुषों के लिए
नहीं निकलता संबोधन 'पुरूष'
चाहती मैं उन सत्पुरुषों से
निकाल घर घर से कुकर्मी पुरुषों को
दें शिक्षा इन्हें न नारी काअपमानित करें
हैं यह शक्ति असाधारण हमारी
कर दें वह सब जो ठान लें भारी
बंद हो महामारी घरेलू हिंसा बलात्कार की
समाचार में कोई न दिखें ऐसी दुखद घटना का कोना भी
नारी कह सकें जिसे सशक्तिकरण का आगाज़ यही!

अन्नपूर्णा

दिखती ममता मूरत की
भोज्य सामग्री रखी हुई
स्वर्णाक्षरों से चस्पा हैं
हर भोजी कि क्षुधित सूची।

आस्वादन भावों का अनकहा
डाला है उसने प्रेम भरा
पौष्टिक रस गिनने का
नहीं बना तोल-काँटा जिसका।

स्वकष्टों को देती परे रख
क्षुधा शमन,आहार सुवास
नहीं कर सकता बराबरी
उसका आँचल बेशकीमती।

भावना

शब्दों के खेल

बनकर गये रह

प्रेमियों के मोबाइल पर

लव, किस, मिस

ऊँगलियाँ जाती घूम

बार-बार इन

शब्दों की कुँजियों पर

घिस जाते ये शब्द

मँहगे से मोबाइल पर

फूट पड़ती ज्वाला तब

चेहरे पर एसिड ड़ालकर

शादी में फायर कर

चौराहे पर नग्न कर

उसका बदन नोंचकर

अपने साथियों के साथ

कहकर यह कि-

"हम वफ़ा -ए-आज़म

बेवफा तुम हो

अब भी इस तरह हम
तुमसे वफ़ा निभा रहें....।"
"तुम बनी ही हो
ईश विधान से एक स्त्री
मैं हूँ पुरुष नियम-कानून
घसीट सकता दूर तक
तुम्हारी भावनाओं को कुचलकर
मिले देर-सबेर तुम्हें निर्णय
मैं तब-तक चट कर जाऊँगा
दीमक की तरह...।"

कमाई

मुश्किल से ही नारी समझती
घर मेरा सुन्दर बसेरा है
जवाबदारियों के बोझ तले
बच्चों की परवरिश लिए
यही कहानी औरतों की
पिछली- अगली पीढ़ी कि
साज- संभाल सेवा की
जाती लाली आती सफेदी
कट जाती आधी जिंदगी ।
पति की चौकन्नी निगाहें
पत्नी की करती उलहनाएँ
वरिष्ठों कि जब बनती प्यारी
तभी बन पाती पति की चहेती
तब लगता पत्नी को यह घर
बसेरा है सुंदर कोटर उनका
कोटर से निकल जाते बच्चे
बन सच्चे मोती परदेस कमाने

लगता बसेरा खाली-खाली।
आते करीब अधेडावस्था में
सेवा का दौर लिए पति-पत्नी
आँखों से आंखों में बातें करते
नहीं थकते यादों के झरोखों से
उपकृत से धन्यवाद की मुद्राओं से
लगता दोनों को सच्चे अर्थों में
है, हम दो शरीर एक जान
नहीं धरती पर जोड़ा हमारे समान।
कहते हैं तभी चटकता काँच है
जब लग जाती नजर है
बिछड़ जाता जब हंस का जोडा़
अब कैसा! कहाँ का! वह रैन बसेरा
जब घर "घर" बसेरा न रहता
कमाई धन दौलत सब निर्रथक लगती।

देवयानी नायक, झाबुआ

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

देवयानी नायक
झाबुआ, मध्यप्रदेश

बहुगुणित नारी

स्त्री है गुणों से आच्छादित
फर्क केवल है इतना
कोई स्फटित तो कोई स्फुटित
रखतीं आत्मविश्वास अदम्य साहस
नारी को बनाया ईशशक्ति ने पूरित।
सोचती हूं क्यों वो सब कुछ दबा रहा
हमारे वंशज भी क्या ऐसे ही जियें?
किस खातिर किसके लिए खुद को घोंटा
संस्कार संस्कृति के ताल में भी तो
आजादी से जी सकते थे !
अब जीना है नारी को जीवन सम्मानित
मनाना है उसे लोहा अछूते क्षेत्रों में हर एक
असंभव को संभव का आकाश देना ही होगा
अवनी पर संघर्षों की कहानी को
जीत में परिवर्तित करना ही होगा।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–

978-93-90995-09-7